Vijay Kumar Jha.
Asst Prof
Deptt in History.
V.S.J College Rajnagar
Degree part III
Paper – V

Sufism: Main principles and Sections

इस्लामी रहस्यवाद को ही सूफी धर्म कहा जाता है। सूफी शब्द का मूल स्रोत के संबंध में विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वानों के अनुसार जो व्यक्ति पवित्र थे वे सूफी कहलाये। कुछ विद्वानों के अनुसार मदीना में मोहम्मद साहेब द्वारा बनवाई गई मस्जिद के बाहर चबूतरे पर जिस गरीब मिस्कीन लोगों ने आकर शरण ली वे सूफी कहलाये। अल सिराज के अनुसार सूफी शब्द अरबों के सूफ शब्द से निकला है जिसका अर्थ ऊन होता है और ऊनी कम्बल ओढ़कर जो घूमकर धर्म प्रचार करते थे वे सूफी कहलाये। अधिकांश विद्वान इसी मत को मानते हैं। अवध बिहारी पांडेय के अनुसार सूफी उन मुस्लिम सन्तों को कहा जाता है जो दीनता के जीवन व्यतीत करते थे तथा ऊनी कम्बल ओढ़कर कुरानों के शाब्दिक व्याख्या न देकर उसमें निहित रहस्य का महत्व देते थे। सूफी वाद कि उत्पत्ति इस्लाम धर्म से हुआ है किन्तु सूफी मत पर अन्य धर्मों तथा दर्शन का भी प्रभाव पड़ा है। ईसाई धर्म, दर्शन, हिन्दू, बौद्ध धर्म आदि ने सूफी मत को काफी प्रभावित किया।

सूफी मत के प्रमुख सिद्धान्त —

(1) ईश्वर :— सूफी के अनुसार ईश्वर एक है। विश्व कि सभी वस्तु ईश्वरीय प्रकृत है जो अनेकत्व में एकत्व है।

(2) आत्मा :— सूफी के अनुसार आत्मा ईश्वर का अंश है

(3) जगत :— सूफियों के अनुसार ईश्वर ने गूढ़ रहस्य कि कल्पना के लिये जगत कि रचना की है

(4) ईश्वर और जगत का संबंध :— सूफियों के अनुसार ईश्वर जगत के अन्दर और बाहर विद्यमान है। ईश्वर कि प्रकृति

Scanned with Cam

में वनस्पति, पशु, पक्षी, जीव आदि उसके अंग प्रत्यंग है जैसा
है। (5) मनुष्य :— सूफीयों के अनुसार मानव एक श्रेष्ठ प्राणी है
और वह परमात्मा के सभी गुणों का अभिव्यक्ति करता है
(6) प्रेम :— सूफीयों के साधना में प्रेम का बड़ा महत्व है मानव परमात्मा के सभी स्रोतों के प्रेम के द्वारा प्राप्त कर सकते है। परमात्मा साधक का प्रिय पात्र है।
(7) गुरु का महत्व :— सूफी सन्त में गुरु अथवा पीर का बड़ा महत्व है। गुरु ही साधक को ईश्वर तक पहुँचाता है। बिना आध्यात्मिक गुरु से ईश्वर को प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

सूफी सन्तों के अनुसार :- साधना के सात सोपान है —
(1) अनुताप, (2) आत्म संयम, (3) वैराग्य (4) धैर्य, (5) दारिद्र
(6) विश्वास, (7) संतोष।

सूफी सम्प्रदाय :— (1) चिस्ती भारत में इस सम्प्रदाय के स्थापना मुइनुद्दीन चिस्ती ने किया। इन्होंने एकेश्वरवाद का प्रचार किया उनका कथन था कि मानवता कि सेवा ही ईश्वर की सर्वोच्च भक्ति है। इस सम्प्रदाय के प्रसिद्ध सूफी सन्त शेख हमीदुद्दीन नागौरी ख्वाजा फरीदुद्दीन मसूद शकरगंज, निजामुद्दीन औलिया शेख सलीम चिस्ती आदि थे। इस सम्प्रदाय के प्रमुख सिद्धान्त — साधक को 40 दिनों तक निर्जन स्थान पर समय व्यतीत करना होता था गुरु द्वारा निर्देशित नियमों का पालन करना, मानव मात्र कि सेवा करना, धार्मिक सहिष्णु होना, धन से घृणा करना तथा फकीरी जीवन व्यतीत करना था।
(2) सुहरावर्दी :— इस सम्प्रदाय के मूल प्रवर्तक जियाउद्दीन थे शेख शहाबुद्दीन इस सम्प्रदाय के प्रसिद्ध सन्त थे इसके अतिरिक्त शेख सदुद्दीन आरिफ, शेख रुकनुद्दीन, अबुल फतह, सईद जलाल, शेख मूसा आदि थे। सिद्धान्त :— पापों के लिये प्रायश्चित्त करना राजनीति में रुचि रखना, धन को आध्यात्मिक विकास में बाधक नहीं मानना, ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताना, मानव सेवा आदि था।
(3) कादिरी सम्प्रदाय :— इस सम्प्रदाय कि स्थापना ~~[illegible]~~ बगदाद के शेख अब्दुल कादिर जिलानी 12वीं सदी में किया था। मोहम्मद गौस, अब्दुल कादिर, शेख दाऊद किरमानी

Scanned with CamScanner

अब्दुल मावी, मुल्ला शाह आदि प्रसिद्ध सन्त थे सिद्धान्त:-
(1) धन का परित्याग, गरीबों की कल्याणकारी भावना था।
(4) नक्शबंदिया सम्प्रदाय :— इस सम्प्रदाय का प्रवर्तक बहाउद्दीन थे। इन्होंने शरियत के अनुसार जीवन व्यतीत करने पर बल दिया। इस सम्प्रदाय के शेख अहमद प्रमुख सन्त थे जिन्होंने संगीत, नृत्य, पीर सन्तों और उनके मजारों की पूजा करते थे। शाहवली उल्लाह भी इस सम्प्रदाय के प्रसिद्ध संत थे। इस सम्प्रदाय के अंतिम संत मीर दर्द थे।
सिद्धान्त :— इस्लाम धर्म के खोई हुई प्रतिष्ठा वापस लाना संगीत को इस्लाम के विरुद्ध घोषित करना, मजारों पर दीपक जलाने का विरोध करना।

सूफीमत का प्रभाव :— (1) हिन्दू मुस्लिम सम्प्रदायों में समन्वय स्थापित करना, (2) धार्मिक सहिष्णुता पर बल देना
(3) सामाजिक और नैतिक जीवन में परिवर्तन लाना
(4) राजनीतिक प्रभाव, (5) एकेश्वरवाद का प्रचार,
(6) खड़ी बोली तथा प्रान्तीय भाषाओं का विकास

सूफी सन्तों ने हिन्दुस्तानी भाषा के विकास में भी योगदान दिया तथा गुजराती, पंजाबी आदि प्रान्तीय भाषाओं के विकास में भी योगदान दिया।

सूफी सन्त अपनी सादगी, सच्चारित्र तथा धार्मिक भावना के लिये प्रसिद्ध थे वे ईश्वर को प्राप्त करने के लिये सादगीपूर्ण सिद्धान्त प्रतिपादित किया जिसमें कोई अन्धविश्वास तथा वाह्याडम्बर नहीं था जन मानस उनके कथनानुसार उनके सिद्धान्त पर चलने के लिये कोई परेशानी नहीं महसूस करते थे। सूफी सन्तों का प्रभाव हिन्दु एवं मुसलमानों को एक सूत्र में बांध दिया तथा दोनों धर्मों के बीच समन्वय स्थापित किया जो एक मिसाल है।

Scanned with Cam